रॉबर्ट वानॉय, पुराने नियम का इतिहास, व्याख्यान 17

कनान पर अभिशाप, राष्ट्रों की तालिका,

कनान पर कोलाहल का अभिशाप (उत्पत्ति 9:25-26)

हम उत्पत्ति 9, कनान पर श्राप, अध्याय के उत्तरार्ध पर चर्चा कर रहे थे। मैंने वहां की सामान्य स्थिति के बारे में कुछ टिप्पणियाँ कीं; हम श्लोक 25-27 में नूह द्वारा दिए गए श्राप/आशीर्वाद कथनों की सामग्री तक पहुँच गए थे। तो मैं यहीं से शुरू करना चाहता हूं और उन बयानों की सामग्री को देखना चाहता हूं। हम श्लोक 25 में पढ़ते हैं, नूह कहता है, "कनान शापित हो, वह अपने भाइयों के दासों का दास हो।" मैं सोचता हूं कि "वह अपने भाइयों के लिए नौकरों का नौकर होगा" का विचार यह है कि वह एक पूर्ण नौकर होगा। वह अपने भाइयों के आधीन रहेगा; यह एक सशक्त प्रकार का सूत्रीकरण है। तो सवाल यह है कि उसके भाई कौन हैं? यदि आप अध्याय 10 को देखें और छठे श्लोक को देखें तो हमारे लिए इसका उत्तर मिल जाएगा। अध्याय 10 वास्तव में राष्ट्रों का एक पारिवारिक वृक्ष है जो लोगों को नूह के तीन पुत्रों तक ले जाता है। आपने श्लोक 6 में पढ़ा, "हाम के पुत्र: कुश, मिज़्रैम, पूत और कनान।" उत्पत्ति 9:26 कहता है, "कनान शापित हो, वह अपने भाइयों के दासों का दास हो।" उसके भाई कुश, मिज़्रैम और पूत हैं। मिज़राईम मिस्र के लिए हिब्रू शब्द का लिप्यंतरण है। तो मिजराईम मिस्र का क्षेत्र है, कुश को अक्सर इथियोपिया के साथ पहचाना जाता है, लेकिन दूसरी ओर मेसोपोटामिया में एक कुश है, इसलिए इस बात पर विवाद है कि क्या कुश उन लोगों को संदर्भित करता है जो मेसोपोटामिया में बस गए या इथियोपिया में। पूत संभवतः पूर्वी अफ़्रीका या दक्षिणी अरब है, इस बारे में भी कुछ विवाद है।

लेकिन मुझे लगता है कि यहां जो मुद्दा उठाया जा रहा है वह यह है कि हाम के वंशज और ये लोग, कनानी, एक तत्व हैं, हमें वास्तव में उत्पत्ति 10:15-20 को देखना चाहिए, यह देखने के लिए कि कनानी कौन थे। जैसा कि हम श्लोक 15 और उसके बाद देखते हैं, " कनान उसके पहलौठे सीदोन का, और हित्तियों, यबूसियों, अमोरियों, गिर्गाशियों, हिव्वियों, अरकियों, सीनियों, अर्वाडियों, जैमराइटों और हमाथियों का पिता था। बाद में कनानी कुल तितर-बितर हो गए और कनान की सीमाएँ सीदोन से लेकर गरार की ओर गाजा तक, और फिर सदोम, अमोरा, अदमा और ज़ेबोइम

की ओर, लशा तक पहुँच गईं । कनान के वंशज वे लोग हैं जिन्होंने उस स्थान पर कब्ज़ा कर लिया जिसे कनान की भूमि के रूप में जाना जाता है जिसे अंततः इस्राएलियों ने कब्ज़ा कर लिया। यदि आप बाद में विजय आख्यानों को पढ़ेंगे तो आपको हिव्वी, यबूसी, गेर्गाशी, सिनी आदि लोगों की पुनरावृत्ति मिलेगी।

वह " -*इम*" समाप्त हो रहा है, मुझे लगता है कि इसका विश्लेषण करना कठिन होगा। यदि आप उस पर फिर से ध्यान देने के लिए अध्याय 10 पर जाएं, तो वहां बहुत सारे अंत थे, "और मिज़्रैम से लुदीम, और अनामी, और लेहाबीम, और नेफ्तूहिम उत्पन्न हुए।" मुझे लगता है कि यहां संकेत यह है कि ये वास्तव में लोगों का जिक्र कर रहे हैं। अब क्या इन लोगों के पीछे कोई व्यक्ति था जिसका नाम एकवचन में था जो बाद में बहुवचन में बदल जाता है, कहना मुश्किल है। यह बिल्कुल संभव है. लेकिन अध्याय 10 में, आम तौर पर आप उन लोगों के बारे में बात कर रहे हैं जो पूर्वज से उत्पन्न हुए हैं। श्लोक 6 की तरह, हाम एक पूर्वज है लेकिन कुश, मिजराईम और पूत लोगों के प्रतिनिधि प्रमुख प्रतीत होते हैं।

लेकिन अध्याय 10 में वर्णित कनानवासी वे लोग हैं जिन्होंने कनान की भूमि पर कब्जा कर लिया था। मुझे लगता है कि इसकी पूर्ति इस तथ्य में पर्याप्त रूप से देखी जा सकती है कि प्राचीन काल में कनानी बहुत महत्वहीन और पराधीन लोग थे। मेसोपोटामिया और मिस्र महान शक्तियाँ थीं। कनान एक प्रकार का क्रॉस था जहां उन दो शक्तियों ने नियंत्रण के लिए संघर्ष किया और कनानवासी कभी भी प्राचीन निकट पूर्व में एक प्रमुख शक्ति नहीं बन पाए। पहला कनान होगा, जो अपने भाइयों के नौकरों का नौकर होगा, कुश मेसोपोटामिया का प्रतिनिधित्व करेगा और मिज़्रैम मिस्र का प्रतिनिधित्व करेगा, कि कनानवासी मेसोपोटामिया और मिस्रियों के अधीन थे।

सेठ की पंक्ति जब आप पद 26 पर जाते हैं तो आप पढ़ते हैं, "शेम का परमेश्वर यहोवा धन्य है, कनान उसका सेवक होगा।" यह एक दिलचस्प कथन है, "शेम का परमेश्वर यहोवा धन्य है।" इसे इस तरह क्यों रखा जाएगा? ऐसा निश्चित रूप से नहीं है कि शेम का यहोवा से कोई लेना-देना था। यदि ईश्वर का आशीर्वाद है, तो यह वही होगा जो ईश्वर शेम और उसके निहितार्थों के माध्यम से करेगा। अब पवित्रशास्त्र में यह पहली बार है कि भगवान की पहचान कुछ विशेष लोगों के समूह से

की गई है। “शेम का परमेश्वर यहोवा।” शेम के साथ उसकी कुछ खास तरह से पहचान है। अब मुझे ऐसा लगता है कि शेम की पंक्ति का निहितार्थ वह रेखा है जिसके माध्यम से उत्पत्ति 3:15 में वादा किया गया बीज अंततः आएगा।

अब, निःसंदेह, अध्याय 11 में आप शेम की वंशावली को इब्राहीम तक और फिर, इब्राहीम से आगे तक खोजते हैं। परन्तु कनान उसका दास होगा, अर्थात कनान शेम का दास होगा। और आप विजय की पूर्ति के बारे में सोचने के अलावा कुछ नहीं कर सकते, क्योंकि यह शेम की वंशावली से निकला है, इब्राहीम, इसहाक, याकूब के माध्यम से, याकूब के वंशजों के माध्यम से, इस्राएलियों ने अंततः प्रवेश किया और कनान देश पर कब्ज़ा कर लिया, और कनानियों को अधीन कर दो। उदाहरण के लिए, जब आप राजाओं की पुस्तक में जाते हैं, तो आप 1 राजा 9 में पढ़ते हैं, "और वे सभी लोग जो एमोरियों, हित्तियों, परिज्जियों, हिव्वियों, और यबूसियों में से बचे हुए थे, जो इस्राएल के बच्चों में से नहीं थे और उनके जो लड़केबाले उनके पीछे देश में रह गए, और जिनको इस्राएली भी सत्यानाश न कर सके, उन से सुलैमान ने दासत्व का कर लिया, जो आज के दिन तक बना है। तो आपके पास न केवल विजय है, जहां विजय के समय इनमें से कई लोग नष्ट हो गए थे, लेकिन जो बचे थे वे जबरन श्रम के अधीन थे। आपके पास वास्तव में एक भविष्यवाणी कथन है, याद रखें हम नूह के समय में हैं। इसलिए इन बयानों के दूरगामी निहितार्थ हैं।

येपेथ की पंक्ति याद रखें जैसा कि मैंने कहा, ये इच्छाओं या क्रोध के बयान नहीं हैं। वे वास्तव में भविष्यवक्ता हैं। इन कथनों में आत्मा नूह के माध्यम से बोल रहा था। उत्पत्ति 9:27, “परमेश्वर येपेत को बढ़ाएगा, और वह शेम के तम्बुओं में वास करेगा; और कनान उसका दास होगा।” अब निश्चित रूप से पहला कथन स्पष्ट है, येपेथ का विस्तार किया जाएगा। इस बात पर कुछ चर्चा है कि क्या उस कथन का लोगों की संख्या से संबंध है या भौगोलिक दृष्टि से, मुझे यकीन नहीं है कि आप इसे पूरी तरह से सुलझा सकते हैं। उत्पत्ति 10:2-5 में आप पढ़ते हैं, “ येपेत के पुत्र: गोमेर, मागोग, मदै, यावान, तूबल, मेशेक और तीरास। गोमेर के पुत्र: अश्कनज, रीपत और तोगर्मा। यावान के पुत्र: एलीशा, तर्शीश, कित्तीम और रोदानीम । अब मड़ई या मेड मेसोपोटामिया में हैं। जावन आम तौर पर उस प्रायद्वीप में यूनानियों से जुड़ा हुआ है जहां ग्रीस वर्तमान में स्थित है। कुछ अन्य को

पहचानना कठिन है। लेकिन किसी भी मामले में, हम पढ़ते हैं कि "भगवान येपेत को बड़ा करेगा, और वह शेम के तम्बू में निवास करेगा।"

अब एक प्रश्न है कि उस वाक्यांश का क्या अर्थ है, "शेम के तम्बू में निवास करो।" कुछ टीकाकारों का कहना है कि यह जीविका या सुरक्षा का संकेत देता है। येपेत शेम के तम्बुओं में निवास करेगा। शेम किसी तरह येपेत को भरण-पोषण और सुरक्षा देगा। मुझे लगता है कि रॉस के पास एक बेहतर विचार है। रॉस सुझाव देते हैं कि "विस्तार" क्षेत्र से संबंधित है, वाक्यांश में "भगवान जापेथ का विस्तार करेगा।" शेम के तंबुओं में रहने का अर्थ है जाफ़ियों द्वारा क्षेत्र पर विजय प्राप्त करना। विजय, मुझे लगता है कि इसके लिए अच्छा आधार है क्योंकि भजन 78:55 में आप पढ़ते हैं, "उसने अन्यजातियों को भी उनके साम्हने से निकाल दिया, और डोरी से उनका भाग बाँट दिया, और इस्राएल के गोत्रों को उनके तम्बुओं में बसाया।" अब, निःसंदेह, यह येपेत और शेम के बारे में बात नहीं कर रहा है, यह कनान भूमि की विजय के बारे में बात कर रहा है। आप ध्यान दें कि यह क्या कहता है, "उसने इस्राएल के गोत्रों को उनके तम्बुओं में बसाया।" और उस संदर्भ में उनके तंबू में रहने का अर्थ विजय प्रतीत होता है। 1 इतिहास 5:10, यह कहता है, "और शाऊल के दिनों में उन्होंने हागारियों से युद्ध किया, और वे उनके हाथ से मारे गए; और वे गिलाद के सारे पूर्वी देश में अपने डेरों में बस गए।" और ऐसा फिर से लगता है, जो निहित है वह विजय है। उन्होंने इन लोगों को हरा दिया और उनके क्षेत्र पर कब्ज़ा कर लिया। ऐसा प्रतीत होता है कि यहां भविष्यवाणी यह है कि येपेत का विस्तार किया जाएगा और वह शेम पर विजय प्राप्त करेगा, वह शेम के तंबुओं में निवास करेगा।

रॉस का कहना है कि वास्तविक राजनीतिक विजय का इरादा है, और आप इसे शुरू में यूनानियों और रोमनों में देखते हैं। और ग्रीक और रोमन, शुरू में अलेक्जेंडर ने पूर्व की ओर धकेल दिया और कई अन्य देशों के अलावा कनान की भूमि पर कब्जा कर लिया। फिर उसके राज्य के टूटने के बाद आख़िरकार रोमनों ने कब्ज़ा कर लिया। कनान की रोमन विजय में, आपको इसकी पूर्ति मिली है। हालाँकि, इसका तात्पर्य यह है कि इससे धार्मिक आशीर्वाद प्राप्त होता है। क्योंकि सेमाइट्स और यहूदी लोगों के संपर्क के माध्यम से ग्रीक और रोमन अंततः मसीह के ज्ञान में आते हैं। इसलिए भगवान ने येपेत को बड़ा किया, और शेम के तंबुओं में निवास किया, जिसके

परिणामस्वरूप अंततः येपेत को धार्मिक आशीर्वाद मिला। तो ये संक्षिप्त बयान हैं लेकिन इनके दूरगामी निहितार्थ हैं और ये बहुत महत्वपूर्ण हैं। कोई प्रश्न या टिप्पणी?

कनान पर अभिशाप पर लौटें

क्या आपका मतलब है, क्या उसने हाम के बजाय कनान को शाप दिया था? मुझे लगता है कि इसके बारे में आप केवल यही कह सकते हैं कि नूह ने महसूस किया कि किसी तरह हाम में प्रतिबिंबित लक्षण कनान में भी थे, लेकिन शायद उच्च स्तर पर। हम पाते हैं कि कनानी ऐसे लोग थे जिनमें बहुत अधिक अनैतिक व्यवहार था जैसा कि लैव्यिकस और पुराने नियम में अन्य स्थानों पर वर्णित है। मुझे ऐसा लगता है, वह उस प्रभाव के बारे में कुछ समझता है, लेकिन मैं निश्चित नहीं हो सकता, यहां कोई स्पष्टीकरण नहीं है, आपको बस उस तरह की धारणा बनानी होगी।

हाँ, नूह शराब से जाग गया और जानता था कि उसके छोटे बेटे ने उसके साथ क्या किया है, और फिर वह कहता है, "शापित हो कनान।" एनआईवी स्टडी बाइबल नोट में कहा गया है, "कुछ लोग मानते हैं कि हैम के बेटे को उसके पिता के पाप के कारण दंडित किया जाना था।" लेकिन फिर यह कहा जाता है कि यह मानना बेहतर होगा कि कनान और उसके वंशजों को दंडित किया जाना था क्योंकि वे हाम से भी बदतर होने वाले थे। लैव्यव्यवस्था 18 देखें, मुझे लगता है कि बाद वाला संभवतः अधिक उपयुक्त है।

एफ. उत्पत्ति 10 में राष्ट्रों की तालिका आइए एफ पर चलते हैं। "उत्पत्ति 10 में राष्ट्रों की तालिका," मैं इसके बारे में विस्तार से नहीं बताने जा रहा हूं, मैं उल्लेख कर सकता हूं कि उत्पत्ति 10 पर एक अच्छा लेख है *नया बाइबिल शब्दकोश*। इसमें ऐसे कई लोगों की पहचान करने का प्रयास किया गया है। इनमें से कई नामों को लेकर काफी अस्पष्टता और चर्चा है। लेकिन, अगर आप उस पर आगे काम करना चाहते हैं, तो आप उस लेख को देख सकते हैं। मुझे लगता है कि यह आपकी ग्रंथ सूची में है। पृष्ठ 11 पर लगभग एक तिहाई रास्ता, टीटी मिशेल, *न्यू बाइबिल डिक्शनरी में "नेशन, टेबल ऑफ़-"* ।

अध्याय 10 में जहां आपके पास राष्ट्रों की यह तालिका है, आपके पास प्राचीन साहित्य में

कुछ अद्वितीय है। इसका कोई समानांतर नहीं है, बाढ़ वृत्तांत के समान नहीं, जहां आपके पास सृजन की कहानियों में कुछ समानताएं हैं, लेकिन अध्याय 10 के समानांतर कोई नहीं है, जहां मानव जाति की एकता का पता मूल पूर्वजों से लगाया जाता है। इस मामले में, नूह के तीन पुत्रों में से ही ये सभी लोग आये हैं। यह अध्याय वास्तव में अध्याय 9 के छंद 18 और 19 का विस्तार है। 18 और 19 देखें, नूह के साथ घटना के उस अंतराल से ठीक पहले। श्लोक 18 और 19 कहते हैं, “और नूह के पुत्र, जो जहाज़ से निकले, शेम, और हाम, और येपेत थे। हाम कनान का पिता है।” कनान विशेष रुचि का है, क्योंकि यह कनानवासी ही हैं जो इस्राएलियों के साथ संपर्क स्थापित करने जा रहे हैं। "नूह के तीन पुत्र ये हैं: और उन्हीं से सारी पृथ्वी पर फैल गया।" अध्याय 10 उस कथन की व्याख्या करता है। नूह के तीन पुत्रों से सारी पृथ्वी किस प्रकार फैल गई ? तो यह लोगों या राष्ट्रों का वंशवृक्ष है, व्यक्तिगत व्यक्तियों का नहीं। कई मामलों में, राष्ट्रों की शुरुआत एक निश्चित व्यक्ति से हुई। यह पहले पूछे गए प्रश्न पर वापस आता है।

कुछ राष्ट्र काफी प्रसिद्ध हैं, और कुछ बहुत अस्पष्ट हैं। श्लोक 6 में आपके पास मिज़्रैम है, वह मिस्र है। श्लोक 22 में आपके पास एलाम और अश्शूर हैं, जो प्रसिद्ध राष्ट्रों के उदाहरण हैं। ऐसे कई बहुवचन रूप हैं जिनका उल्लेख हम पहले ही "- *im* " के साथ कर चुके हैं। आपको व्यक्तियों की वंशावली में उस तरह की चीज़ नहीं मिलती है, लेकिन इस अध्याय में आपके पास उनमें से कई हैं। आपके पास दूसरे प्रकार का रूप भी है जिसे आप उदाहरण के लिए पद 16 और उसके बाद कनानी और यबूसी में देखते हैं। "-इट" का अंत, एमोराइट्स, गिर्गासाइट्स, हिव्वाइट्स, आर्काइट्स, साइनाइट्स और अर्वाडाइट्स। यह अंग्रेज़ों, या फ़्रांसीसी लोगों या उस प्रकार का कुछ कहने जैसा है। यह व्यक्तियों की तुलना में लोगों या राष्ट्रों का अधिक संकेत है।

निम्रोद अब एक अपवाद श्लोक 8 और निम्नलिखित में है, जहां आपने पढ़ा कि कुश से निम्रोद का जन्म हुआ। अब आपको कुश के मेसोपोटामिया में होने की चर्चा याद है, इस बिंदु पर यह स्पष्ट रूप से मेसोपोटामिया प्रतीत होता है, क्योंकि यह कहता है, "कुश से निम्रोद उत्पन्न हुआ।" और वह एक व्यक्ति प्रतीत होता है, क्योंकि “वह पृथ्वी पर एक शक्तिशाली व्यक्ति होने लगा। वह यहोवा की दृष्टि में पराक्रमी शिकारी था; इसलिये ऐसा कहा जाता है, कि निम्रोद यहोवा की दृष्टि में पराक्रमी शिकारी

था। और उसके राज्य का आरम्भ शिनार देश में बाबेल, और एरेक, और अक्काद, और कलनेह से हुआ। उस देश से अश्शूर निकला, और नीनवे को बसाया।" ऐसा प्रतीत होता है कि यह मेसोपोटामिया क्षेत्र है, और वह एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति प्रतीत होता है, इतना महत्वपूर्ण कि उसे राष्ट्रों की इस तालिका में प्रस्तुत किया गया है। उसका नाम निम्रोद है। इस बात पर बहुत चर्चा हुई है कि निम्रोद कौन था, और वास्तव में उसे किसी ज्ञात ऐतिहासिक व्यक्ति के साथ पहचानने का कोई समाधान नहीं है। कुछ लोगों ने प्रस्तावित किया है कि यह अक्कड़ का नरम पाप था जो लगभग 2220 ईसा पूर्व का था। फाइनगन ने नरम पाप पर चर्चा की है लेकिन उन्होंने पृष्ठ 46 और उसके बाद निम्रोद पर चर्चा नहीं की है। मुझे नहीं लगता कि हम जानते हैं कि निम्रोद कौन था, लेकिन वह एक महत्वपूर्ण व्यक्ति रहा होगा। आपकी ग्रंथ सूची में डब्ल्यूएच बिथस्पेन द्वारा लिखित एक लेख है , "निम्रोद कौन थे?" जहां वह बहुत अधिक निश्चितता और निष्कर्ष के बिना कुछ संभावनाओं पर चर्चा करता है।

प्रारंभिक दर्शक कौन थे? अब जहां तक उस अध्याय के उद्देश्य की बात है जिसका मैंने पहले ही उल्लेख किया है, यह नूह के तीन पुत्रों के बारे में लोगों का पता लगाना है। लेकिन ऐसा लगता है कि यह उन लोगों को देने के लिए है जिनके लिए यह पहली बार लिखा गया था कि जिन लोगों को वे जानते थे वे उन तीन बेटों से कैसे संबंधित थे। अब सवाल यह है कि यह सबसे पहले किसके लिए लिखा गया था? और हम इसके बारे में बहुत निश्चित नहीं हो सकते। हालाँकि इसके बारे में कुछ बातों पर ध्यान दें। बाढ़ पहले ही आ चुकी थी. श्लोक 1, "अब नूह, शेम, हाम और येपेत के पुत्रों की ये वंशावली हैं: और उनके पुत्र जलप्रलय के बाद उत्पन्न हुए।" निम्रोद एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्ति थे। बेबीलोन और नीनवे पहले ही स्थापित हो चुके थे। आप इसे श्लोक 10 और 11 में पाते हैं। सदोम और अमोरा अभी तक नष्ट नहीं हुए थे, क्योंकि जब कनानियों का विनाश होता है, तो उनकी सीमाएँ कहती हैं, "जब तुम सदोम और अमोरा को जाओ।" और दिलचस्प बात यह है कि भाषाओं का भ्रम पहले ही हो चुका था। श्लोक 13, "ये शेम के पुत्र हैं, उनके कुलों के अनुसार, उनकी जीभ के अनुसार, उनके देशों में, उनके राष्ट्रों के अनुसार।" अब टॉवर ऑफ़ बैबेल की कहानी अध्याय 11 तक घटित नहीं होती है। लेकिन आप इस बिंदु पर अनुक्रम देखते हैं। आप नूह

के तीन बेटों के साथ काम कर रहे हैं और यह सब नूह के तीन बेटों से कैसे विकसित हुआ। लेखक ने इसे नूह की कहानी के अंत में रखा है, इससे पहले कि वह हमें बैबेल की मीनार के बारे में बताए। लेकिन ये सभी लोग अपनी अलग-अलग भाषाओं और भाषाओं के साथ विकसित होते हैं, और निश्चित रूप से। इसे बाद में अध्याय 11 में वर्णित किया गया है। इसलिए किसी ने सुझाव दिया कि यह अब्राहम के समय के बारे में लिखा गया होगा, और यह समझ में आएगा। ऐसा प्रतीत होता है कि इनमें से अधिकांश लोगों को इब्राहीम के समय (लगभग 2000 ईसा पूर्व) के बारे में जाना जाता होगा।

मूसा को उसकी जानकारी कैसे मिली? मूसा को स्रोतों के साथ, उत्पत्ति की पुस्तक की प्रारंभिक सामग्री के साथ काम करना था। मूसा इब्राहीम के समय या इब्राहीम के समय से पहले नहीं था। उदाहरण के लिए , उसे इस समय, नूह के बारे में जानकारी कैसे मिली ? उसे इब्राहीम के बारे में जानकारी कैसे मिली? उसके पास अवश्य ही कुछ सामग्री रही होगी। इसलिए मैं मान रहा हूं कि उसने उत्पत्ति की पुस्तक के कुछ हिस्सों की रचना करने के लिए पहले के समय के पहले से ही लिखित अभिलेखों के साथ काम किया, ठीक है, उस मामले के लिए उत्पत्ति की सभी पुस्तक। यह मूसा के समय से पहले की बात है क्योंकि मूसा निर्गमन के शुरुआती अध्यायों में आता है। इसका खुलासा हो सकता था. प्रभु उसे ये बातें बता सकते थे। यह एक संभावना है. लेकिन आम तौर पर पवित्रशास्त्र के लेखन के साथ ऐसा लगता है, मेरा मतलब है कि यदि आप किंग्स की पुस्तक को देखें, तो यह स्पष्ट है कि उन्होंने लिखित स्रोतों के साथ काम किया। सैमुअल की पुस्तक से यह स्पष्ट है कि लेखक ने स्रोतों के साथ काम किया है। इतिहास में आपके पास शमूएल भविष्यवक्ता के लेखन का स्पष्ट रूप से उल्लेख है। शमूएल भविष्यवक्ता के लेख क्या थे? उन्होंने अपने समय के कुछ अभिलेख अवश्य रखे होंगे। जिस व्यक्ति ने शमूएल की पुस्तक को संकलित किया, उसने अवश्य ही उन अभिलेखों का उपयोग किया होगा। तो फिर यह उन किताबों के लेखकों के लिए पवित्रशास्त्र में कहीं और असामान्य बात नहीं है जो अपने समय से पहले की जानकारी के स्रोतों का उपयोग करने के लिए लंबी ऐतिहासिक अवधियों का सर्वेक्षण करते हैं। और वास्तव में इब्राहीम से एक सहस्राब्दी पहले। इसीलिए आप देखते हैं, कई बार, जब आप स्रोतों के बारे में बात करते हैं,

विशेष रूप से इंजीलवादियों से, तो ऐसा लगता है कि यह स्रोत की आलोचना के लिए किसी प्रकार की रियायत है। यह उससे बिल्कुल अलग बात है. यह सिर्फ इतना है कि मुझे लगता है कि इन इतिहासकारों ने अपनी सामग्री पर शोध किया है। बहुत कुछ वैसा ही जैसा आज कोई इतिहासकार करेगा। अब पवित्र आत्मा ने इसकी देखरेख की ताकि जो कुछ उन्होंने उपयोग किया और जो कुछ उन्होंने लिखा वह त्रुटि से मुक्त हो। स्रोतों का उपयोग करने में कोई समस्या नहीं है (cf. ल्यूक 1:1-4)। समस्या तब आती है जब आप यह कहना शुरू करते हैं कि यह पुस्तक कई स्रोतों से बनी है और वे विरोधाभासी हैं। अब जैसे, सृजन का एक J दस्तावेज़ खाता, सृजन के P दस्तावेज़ से भिन्न है। दोनों में सामंजस्य नहीं बिठाया जा सकता. वे विरोधाभासी हैं और वे ऐतिहासिक रूप से सटीक या विश्वसनीय नहीं हैं। तब आपके पास एक वास्तविक समस्या है. उत्पत्ति 10 में राष्ट्रों की तालिका पर कोई अन्य प्रश्न?

जी. बाबेल का गुम्मट और भाषाओं का भ्रम (उत्पत्ति 11:1-9) जो हमें जी तक लाता है। "बाबेल का गुम्मट, और भाषाओं का भ्रम, उत्पत्ति 11:1-9।" मुझे उन छंदों को पढ़ने दो, "सारी पृथ्वी एक ही भाषा और बोली थी।" देखिए अब हम उस समय से पहले वापस चलते हैं जब ये सभी लोग विकसित हुए थे, “ जैसे-जैसे लोग पूर्व की ओर बढ़े, उन्हें शिनार में एक मैदान मिला और वे वहां बस गए। उन्होंने एक-दूसरे से कहा, 'आओ, ईंटें बनाएं और उन्हें अच्छी तरह से पकाएं।' उन्होंने पत्थर के स्थान पर ईंट और गारे के स्थान पर तारकोल का प्रयोग किया। तब उन्होंने कहा, आओ, हम अपने लिये एक ऐसा नगर बनाएं, जिसका गुम्मट आकाश तक पहुंचे, कि हम अपना नाम करें, और सारी पृथ्वी पर फैल न जाएं। परन्तु यहोवा उस नगर और गुम्मट को देखने के लिये नीचे आया, जिसे वे लोग बना रहे थे। यहोवा ने कहा, 'यदि वे एक ही भाषा बोलने वाले लोग ऐसा करने लगें, तो वे जो कुछ भी करने की योजना बना रहे हैं वह उनके लिए असंभव नहीं होगा। आओ, हम नीचे चलें और उनकी भाषा में गड़बड़ी करें ताकि वे एक-दूसरे को न समझ सकें।' इसलिये यहोवा ने उनको वहां से सारी पृथ्वी पर तितर-बितर कर दिया, और उन्होंने नगर बनाना बन्द कर दिया। इसी कारण उसे बाबेल कहा गया, क्योंकि वहां यहोवा ने सारे जगत की भाषा में गड़बड़ी कर दी। वहां से यहोवा ने उनको सारी पृथ्वी पर तितर-बितर कर दिया ।

ईश्वर ने बाबेल की मीनार पर हस्तक्षेप क्यों किया? अब हम उस कहानी में पाते हैं कि अध्याय 10 में लोगों की बहुलता का वर्णन कैसे किया गया है। जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, अध्याय 10 में भाषा में अंतर का पहले ही उल्लेख किया गया है। तो अब हम देखते हैं कि लोगों के कई भाषा समूहों में विभाजित होने का कारण क्या था। मुझे लगता है कि हम कह सकते हैं कि अध्याय का उद्देश्य स्पष्ट रूप से किसी ऐसी चीज़ के रिकॉर्ड के रूप में लिया जाना है जो वास्तव में घटित हुई थी, एक ऐतिहासिक घटना। कई लोग इसे मिथक या किंवदंती कहेंगे। कई लोग इसे वर्गीकृत करेंगे, जैसा कि हमने पहले एक नृवंशविज्ञान किंवदंती के रूप में चर्चा की थी। आप इस कहानी का उपयोग यह समझाने के लिए कर सकते हैं कि इतनी सारी भाषाएँ क्यों हैं। लेकिन इसे यहां सीधे इतिहास के रूप में प्रस्तुत किया गया है। मैं सोचता हूं कि उस प्रश्न के प्रति व्यक्ति का अधिकांश दृष्टिकोण पवित्रशास्त्र के प्रति उसके मूल दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। क्या यह इसे विश्वसनीय, विश्वसनीय तरीके से प्रस्तुत करता है इसका मतलब है कि ऐसा हुआ या ऐसा नहीं हुआ। शास्त्र निश्चित रूप से ऐसा करने का दावा करता है। इस बात पर संदेह करने का कोई कारण नहीं है कि यह यहाँ ऐसा नहीं कर रहा है।

अब सवाल उठता है, जिसका जवाब देना इतना आसान नहीं है कि वो कौन सा टावर बना रहे थे? भगवान ने हस्तक्षेप क्यों किया? वे जो कर रहे थे उसमें इतनी परेशान करने वाली बात क्या थी? इसके अधिकांश उपचारों में, आप पाएंगे कि बाबेल का टॉवर मेसोपोटामिया के ज़िगगुराट्स से जुड़ा हुआ है। आपने संभवतः मेसोपोटामिया में निर्मित उन स्तरीय प्रकार की इमारतों, चरणबद्ध पिरामिड जैसी संरचनाओं की तस्वीरें देखी होंगी। उनके उद्देश्यों के बारे में विभिन्न सिद्धांत हैं । मुख्य सिद्धांत यह है कि यह देवता का सिंहासन और देवता की वेदी थी। यह एक प्रकार का पर्वत था जहाँ से देवता विश्व पर शासन करते थे। अब यदि आपको फाइनगन में पढ़ना याद है, तो वह पृष्ठ 50 पर कहते हैं, उर के तीसरे राजवंश, जो कि 2000 ईसा पूर्व है, के बारे में चर्चा करते हुए, वह कहते हैं, "पहला राजा उर नामू था, जिसने उर और अकद के राजा की नई उपाधि ली, जो सबसे शक्तिशाली था काम उर में महान जिगगुराट का निर्माण था। ज़िगगुराट जो बेबीलोन में खड़ा था और आज का हम्मुराबी, उर के स्वर्ग और पृथ्वी के मंच का घर। यह और अधिक प्रसिद्ध हो गया

और बाइबिल परंपरा में इसे बाबेल की मीनार के रूप में याद किया गया।" तो वह कह रहा है कि हम्मुराबी द्वारा निर्मित जिगगुराट, जो लगभग 1700 ईसा पूर्व का होगा, बाइबिल परंपरा में यहां बाबेल की मीनार के रूप में याद किया जाता है। लेकिन उनका कहना है कि उर का जिगगुराट इस प्रकार के सभी स्मारकों आदि में सबसे अच्छा संरक्षित है। यह मानना होगा कि यहां मौजूद सामग्री एक बहुत ही पौराणिक प्रकार की चीज है, जो जिगगुराट से जुड़ी हुई है जिसे हम्मुराबी ने लगभग 1700 ईसा पूर्व बनाया था लेकिन हम 1700 ईसा पूर्व से पहले निर्मित किसी चीज़ के बारे में बात कर रहे हैं यह भाषाओं और लोगों की बहुलता के विकसित होने से पहले की है। . इसलिए मुझे नहीं लगता कि मेसोपोटामिया में मौजूद किसी भी जिगगुराट और बाबेल की मीनार के बीच कोई संबंध हो सकता है।

बैबेल की मीनार का उद्देश्य बहुत से लोग भगवान के क्रोध को इस आधार पर समझाने की कोशिश करते हैं कि यह किसी प्रकार की बुतपरस्त पूजा थी जो इन ज़िगगुराट्स पर की जा रही थी। यदि आप "टावर" के लिए हिब्रू शब्द को देखें तो यह दिलचस्प है, श्लोक 4 कहता है, "आओ, हम अपने लिए एक नगर और एक गुम्मट बनाएं।" हिब्रू शब्द *मिग्डोल है*। मैं इसे आपमें से उन लोगों के लिए बोर्ड पर रखूंगा जिन्होंने हिब्रू भाषा ली है। यदि आप उस शब्द के उपयोग को देखें, तो आप पाएंगे कि इसका उपयोग अक्सर किलेबंदी, रक्षा टावरों के संदर्भ में किया जाता है। 2 इतिहास 26:9, "और उज्जिय्याह ने यरूशलेम में कोने के फाटक, तराई के फाटक, और शहरपनाह के मोड़ पर गुम्मट बनवाए, और उनको दृढ़ किया। और उस ने जंगल में गुम्मट बनवाए, और बहुत से कुएं खोदे, क्योंकि उसके पास बहुत से पशु थे। ऐसा प्रतीत होता है कि इनका उद्देश्य सैन्य था। ड्यूटोरोनॉमी में, कनानियों के बारे में बात करते हुए, आप 1:28 में पढ़ते हैं, "हम कहाँ जाएँ, हमारे भाइयों ने यह कह कर अपने मन को हतोत्साहित किया है, कि वे लोग हम से बड़े और लम्बे हैं; नगर महान हैं और स्वर्ग तक दीवार से घिरे हैं।" वहां आपके पास "टॉवर" शब्द का उपयोग नहीं है , लेकिन आपके पास ऐसे शहर हैं जो दीवारों से घिरे हुए हैं, लेकिन वे "स्वर्ग की ओर दीवार से घिरे हुए हैं।" आप उत्पत्ति 11:4 में देखते हैं, "आओ हम एक नगर और एक मीनार बनाएँ जिसकी चोटी स्वर्ग तक पहुँचे।" यह उसी प्रकार की अभिव्यक्ति है. व्यवस्थाविवरण 9:1 में आपकी वही

अभिव्यक्ति है। "आज तू यरदन को पार करने पर है, और अपने से बड़ी और सामर्थी जातियोंके अधिकारी होने को, और बड़े बड़े नगरोंका और स्वर्ग तक बाड़ेवाले नगरों का अधिकारी होने को है।" "स्वर्ग तक किलेबंदी", ऐसे कई अन्य संदर्भ हैं जिनमें टावर हैं जिनमें किलेबंदी का विचार है। अब, शायद यहाँ उत्पत्ति 11:4 में जो चल रहा है वह यह है कि बेबीलोन और इस शहर का निर्माण करने वाले लोग इसे राजनीतिक शक्ति और शेष मानव जाति के लिए अत्याचारी नियंत्रण का केंद्र बनाना चाहते थे। यह सिर्फ एक सुझाव है, किसी प्रकार का पूर्ण नियंत्रण और प्रभुत्व।

आपने श्लोक 4 में देखा है कि यह कहता है कि हम न केवल एक मीनार बनाएं जो स्वर्ग तक पहुंचे, बल्कि हमें एक नाम भी बनाने दें। वे एक नाम वाले लोग बनना चाहते थे। वे प्रमुख व्यक्ति बनना चाहते थे। उस विचार का पता लगाया जा सकता है, आपको अध्याय 4, श्लोक 17 में पहले से ही याद है, “और कैन अपनी पत्नी को जानता था; और वह गर्भवती हुई, और हनोक को जन्म दिया; और उस ने एक नगर बसाया, और उस नगर का नाम अपने पुत्र के नाम पर हनोक रखा।” वह कैन की पंक्ति में है. और उत्पत्ति 6:4 में, जब आप परमेश्वर के पुत्रों और मनुष्य की पुत्रियों के उस वृत्तांत में हैं, “उन दिनों में पृथ्वी पर दानव थे; और उसके बाद भी, जब परमेश्वर के पुत्र मनुष्य की पुत्रियों के पास आए, और उनके द्वारा बच्चे उत्पन्न हुए, तो वे प्राचीनकाल के शूरवीर और प्रसिद्ध पुरूष बन गए। तो यदि आप उत्पत्ति 6:4, "नाम वाले पुरुष" को इसी प्रकार समझते हैं, तो नगर राज्य के राजाओं के इन बहुपत्नी संबंधों की संतानें हैं। ऐसा लगता है जैसे यह पहले से ही पृथ्वी पर हिंसा के साथ था। तो मुझे ऐसा लगता है कि अध्याय 11 में बाबेल की मीनार के निर्माण में इस तरह का विचार शामिल हो सकता है, यानी ईश्वर से अलग मानव शक्ति का उल्लास। तो टावर का उद्देश्य मानव गौरव की संतुष्टि, अत्याचारी शासन का विस्तार करने का प्रयास और भगवान हस्तक्षेप होगा। वह उसका निर्माण रुकवा देता है और लोगों को तितर-बितर कर देता है।

भाषाओं का भ्रम अब यह हमें भाषा के प्रश्न के भ्रम में लाता है क्योंकि भगवान कहते हैं, " देखो, लोग एक हैं, और उन सब की भाषा एक है; और वे ऐसा ही करने लगे: और अब जो कुछ उन्होंने करने की कल्पना की है, उस में से कुछ भी उन से रोका न जाएगा। आओ, हम नीचे चलें, और वहां उनकी भाषा में गड़बड़ी फैलाएं, ऐसा न हो कि वे एक दूसरे की बोली समझ सकें।' इस

प्रकार यहोवा ने उनको सारी पृथ्वी भर पर तितर-बितर कर दिया; और उन्होंने नगर बनाना बन्द कर दिया। यह प्रश्न अक्सर पूछा जाता है कि भाषाओं के अध्ययन के परिणाम किस हद तक उत्पत्ति 11:1-9 से मेल खाते हैं? जो लोग भाषाओं का अध्ययन करते हैं वे हमें बताएंगे कि भाषा एक लंबी धीमी प्रक्रिया से विकसित होती है और ऐसा कहा जा सकता है कि सभी भाषाएं प्रवाह में हैं। वे सभी परिवर्तन की निरंतर प्रक्रिया में हैं और आप इसे आज देख सकते हैं। यदि आप कुछ वर्षों की अवधि में कुछ भाषाओं पर नज़र डालें तो आप इसे देख सकते हैं। हम इसे अंग्रेजी के साथ देख सकते हैं, जिस तरह से यह पिछले कई सौ वर्षों में बदल गया है। अब निश्चित रूप से उत्पत्ति 11:1-9 भाषा के उस प्रकार के विकास को बाहर नहीं करता है, लेकिन यह व्याख्या का एक महत्वपूर्ण बिंदु उठाता है, जो कि श्लोक 7 फैलाव का कारण प्रदान करता है? आयत 7 कहती है, “आओ, हम नीचे जाएँ, और वहाँ उनकी भाषा में गड़बड़ी फैलाएँ, कि वे एक दूसरे की बोली न समझ सकें। इस प्रकार यहोवा ने उन्हें तितर-बितर कर दिया।” क्या यह भाषा का भ्रम है जो फैलाव का कारण बनता है, या क्या श्लोक 8 श्लोक 7 में भाषाओं के भ्रम की पूर्ति के लिए साधन प्रदान करता है? दूसरे शब्दों में, क्या ऐसा इसलिए है क्योंकि लोग बिखर गए और फिर जैसे-जैसे वे अलग-थलग हो गए और अलग-अलग जगहों पर बस गए, धीरे-धीरे अलग-अलग भाषाएँ विकसित हुईं? क्या श्लोक 7, श्लोक 8 में बिखराव का कारण बनता है या श्लोक 8, श्लोक 7 में भाषाओं के भ्रम की पूर्ति के लिए साधन प्रदान करता है? सबसे आम दृष्टिकोण, और जो हमारे लिए सबसे अधिक स्वीकार्य है, वह यह है कि भगवान का तत्काल कार्य कुछ अनिर्दिष्ट तरीकों से भाषाओं का भ्रम था।

हमें नहीं पता कि उसने ऐसा कैसे किया. लेकिन भगवान का एक तत्काल कार्य था, "आइए हम नीचे जाएं, और वहां उनकी भाषा को भ्रमित करें।" उसने वैसा ही किया. हम ठीक से नहीं जानते कि कैसे, लेकिन उसने लोगों की ज़बानों को भ्रमित कर दिया ताकि वे एक-दूसरे को समझ न सकें। यही बिखराव का कारण बना.

आपको ऐसे लोग मिलते हैं जो संवाद नहीं कर सकते, और जो संवाद कर सकते हैं वे एक साथ मिल जाते हैं और धीरे-धीरे आपमें बिखराव आ जाता है। तो दैवीय हस्तक्षेप जीभों का भ्रम होगा। फैलाव परिणाम था. यदि ऐसा मामला है, तो भाषा विकास की वर्तमान प्रक्रियाएँ यहाँ शामिल नहीं हैं, इसलिए यहाँ दैवीय हस्तक्षेप है।

एक वैकल्पिक संभावना जिसके लिए कुछ लोगों ने तर्क दिया है वह है ईश्वर का तत्काल बिखरने का कार्य। फिर कुछ अनिर्दिष्ट तरीकों से, लेकिन उसने लोगों को तितर-बितर कर दिया। उसने उन्हें तितर-बितर कर दिया और फिर भाषाएँ वर्तमान में देखने योग्य प्रक्रियाओं के अनुसार भ्रमित हो गईं, क्योंकि लोग अलग हो गए थे। तो दैवीय हस्तक्षेप बिखराव में होगा। भाषाविद् हमें बताते हैं कि एक ही भाषा बोलने वाले लोगों के दो समूहों के अलग होने से, जो अलग-थलग हैं, समय के साथ दो अबोधगम्य भाषाओं का जन्म होगा, जो दिलचस्प है। यह प्रदर्शित किया गया है कि एक ही भाषा वाले लोगों को एक निश्चित समय के अंतराल में अलग करने पर परस्पर समझ से बाहर होने वाली भाषाएँ सामने आएँगी। तो यह दूसरा प्रस्ताव है जो कुछ लोगों ने दिया है। शायद दोनों शामिल थे.

तीसरा प्रस्ताव यह है कि शायद दोनों शामिल थे। शायद भगवान ने हस्तक्षेप किया, भाषाओं को भ्रमित किया जिसके कारण वे बिखर गईं, और फिर भाषाओं के प्राकृतिक भेदभाव की प्रक्रिया तेज हो गई और जारी रही। अब, भाषाओं का अध्ययन करने वाले भाषाविद् हमें बताते हैं कि इतनी सारी भाषाएँ हैं, और वे इतनी व्यापक रूप से भिन्न हैं कि उन्हें मूल एकता में वापस नहीं खोजा जा सकता है। हालाँकि, उन्हें अपेक्षाकृत कम संख्या में मूल स्टॉक भाषाओं में खोजा जा सकता है। यह इसके साथ फिट बैठता है, यदि ईश्वर ने भाषाओं को भ्रमित किया होता, तो हम नहीं जानते कि कितनी भाषाएँ हैं, लेकिन यह अपेक्षाकृत कम संख्या हो सकती थी और फिर ये सभी सैकड़ों और हजारों भाषाएँ जिन्हें हम आज जानते हैं, उसके बाद विकसित हुईं।

इस पुस्तक में, *आधुनिक विज्ञान और ईसाई धर्म*, यह आपकी ग्रंथ सूची पर है, लेख में एक प्रोफेसर की टिप्पणी है, ठीक बीच में, "ईसाई और मानवविज्ञान," भाषा पर जो दिलचस्प है। वे बताते हैं कि आज सभी दर्ज इतिहास में सभी भाषाएँ निरंतर और स्थिर परिवर्तन से गुजर रही हैं। कुछ में यह दूसरों की तुलना में अधिक त्वरित है, लेकिन सभी भाषाएँ लगातार बदल रही हैं। इसके अलावा, सभी भाषा या बोली समूह जो एक समरूप या परस्पर क्रिया करने वाले समुदाय का निर्माण नहीं करते हैं, वे इस तरह से बदल रहे हैं कि वे परस्पर कम और कम समझदार होते जा रहे हैं। इस प्रकार, अफ्रीका में सूडान के कुछ क्षेत्रों में एक-दूसरे से कुछ ही घंटों की दूरी पर, परस्पर समझ से परे भाषाएँ बोली जाती हैं, हालाँकि दोनों की उत्पत्ति एक ही मूल भाषा से हुई है। यह

प्रक्रिया पूरे इतिहास में जारी है। ताकि भाषाएँ उतनी ही भिन्न हों, अब मैं भाषाओं की एक लंबी सूची पढ़ने जा रहा हूँ, जैसे अंग्रेजी, जर्मन, डच, डेनिश, नॉर्वेजियन, स्वीडिश, आयरिश, स्कॉटिश, गेलिक, वेल्श, लिथुआनियाई, पोलिश, जैसी आधुनिक भाषाएँ। रूसी, बोहेमियन, पुर्तगाली, फ़्रेंच, इतालवी, रोमानियाई, अल्बानीज़, ग्रीक, ईरानी, हिंदू, अब विलुप्त हो चुकी शास्त्रीय भाषाओं का उल्लेख नहीं किया गया है, जिनमें से कई लैटिन और संस्कृत से ली गई हैं। इसके अलावा कई अन्य कम प्रसिद्ध, सभी को भाषाविदों द्वारा इंडो-यूरोपीय नामक एक ही भाषा से परिवर्तन की नियमित प्रक्रियाओं से उपजा हुआ दिखाया जा सकता है। इंडो-यूरोपीय और हित्ती, जो अब विलुप्त हो चुकी हैं, को भी इसी तरह पुरानी भाषाओं से लिया गया दिखाया जा सकता है। आप देखिए, आपको भाषाओं का यह भंडार वापस एक मूल समूह में मिल जाता है, जो कि भाषाओं का एक छोटा समूह होता है। यह काफी आश्चर्यजनक बात है.

निःसंदेह, आधुनिक संचार के कारण आज वह प्रक्रिया शायद कुछ हद तक कम हो गई है। अंग्रेजी एक वैश्विक भाषा बनती जा रही है। मुझे लगता है यह दिलचस्प है. स्टिगर्स ने उत्पत्ति पर अपनी टिप्पणी में, जो पृष्ठ 11 के मध्य में भी है, बताया है कि एक अश्शूरविज्ञानी ने पता लगाया है कि मध्य और दक्षिण अमेरिकी, प्रशांत द्वीपों और सुमेरिया के मूल निवासियों की भाषाओं के बीच एक बहुत ही निश्चित संबंध है। मिस्र के। तो आप देखते हैं कि आप सुमेरिया, मेसोपोटामिया और मिस्र से दक्षिण अमेरिका और प्रशांत द्वीप समूह की ओर बढ़ रहे हैं। और इन लोगों की भाषाओं के बीच संबंध खोजें। कोई प्रश्न या टिप्पणी?

लिखित जॉनाथन क्लैन्सी
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
राचेल एशले द्वारा अंतिम संपादन
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया